प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 21: शिष्यत्व संबंधपरक है (10a)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **1 पतरस 1:22-23**
22 सत्य के प्रति अपनी आज्ञाकारिता से अपनी आत्माओं को शुद्ध करके, एक सच्चे भाईचारे के प्रेम के लिए,
शुद्ध हृदय से एक-दूसरे से सच्चे दिल से प्रेम करो, 23 वर्ष से जब से तुम फिर से जन्मे हो,
नाशवान बीज से नहीं, बल्कि अविनाशी से,
परमेश्वर के जीवित और स्थायी वचन के माध्यम से;

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* **– 1 पतरस 1**

चरण 4: व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:

एक. लेखक आठ गुण सुझाते हैं जो हमें हमारे शिष्य/प्रशिक्षु के साथ स्वस्थ संबंध विकसित करने में मदद करते हैं।

दो. पहली विशेषता है "गर्मजोशी", जो आपके प्रशिक्षु के लिए प्रेम और कोमलता का रवैया है।

तीन. अपने शिष्य को यह बताना महत्वपूर्ण है कि आप उससे प्यार करते हैं। अपने प्यार को व्यक्त करने के तरीके खोजें ताकि वे जान सकें कि आपकी स्वीकृति और प्यार सच्चा है।

चार. याद रखें कि आपके कार्य आपके शब्दों से अधिक बोलते हैं। शब्द आवश्यक और महत्वपूर्ण हैं लेकिन कार्य अधिक महत्वपूर्ण हैं।

पाँच. फिलिप्स लिखते हैं कि कोमलता के लिए सही समय पर सही तरीके से कहने के लिए सही बातों की तीव्र समझ आवश्यक है, जिसके लिए ईश्वरीय बुद्धि चाहिए (याकूब 3:17)।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
अध्याय 10a लेखक के अनुसार – कीथ फिलिप्स:

शिष्यत्व संबंधपरक होता है

शिष्यत्व जीवन से जीवन की एक मुलाकात है। यह केवल बैठकों की एक श्रृंखला या अध्ययन का एक निश्चित पाठ्यक्रम नहीं है। यह मूल रूप से संबंधपरक है—जो आप किसी अन्य व्यक्ति में हैं उसका निवेश। आपके शिष्य में मसीह में जीवन की पूर्णता को पुनः उत्पन्न करने में आपकी सफलता आपके संबंध की ताकत के अनुसार बढ़ेगी या घटेगी। मैं आठ गुण सुझाना चाहता हूँ जो आपको अपने शिष्य के साथ स्वस्थ संबंध विकसित करने में मदद करेंगे।

गर्माहट

गर्मजोशी प्रेम और कोमलता का एक दृष्टिकोण है जो मौखिक और गैर-मौखिक संचार के मिश्रण के माध्यम से व्यक्त होता है। आपका एक-दूसरे के प्रति प्रेम मसीह के प्रति आपके प्रेम का सबसे महत्वपूर्ण संकेतक है। पहला पतरस 1:22 ईसाइयों को एक-दूसरे से पूरे दिल से प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। निःस्वार्थता, दासता और प्रतिबद्धता प्रेम का निर्माण करते हैं और आपके अधीन-अधिकार संबंध को दुनिया में साझेदारियों से अलग करते हैं।

प्रेम अपने भाई के लिए सबसे अच्छा खोजता है। यह सच्ची चिंता में प्रकट होता है। पौलुस ने बरनबास से कहा, "... आइए हम हर उस शहर के भाइयों से मिलें जहाँ हमने प्रभु का वचन सुनाया, और देखें कि वे कैसे हैं" (प्रेरितों के काम 15:36)। आपका शिष्य एक मित्र है, आध्यात्मिक परियोजना नहीं। उसके दुखों को सुनो और उसे दुःख में सांत्वना दो। उसकी रुचियों, चिंताओं और खुशियों को अपनी समझो। उन लोगों और घटनाओं में ईमानदारी से रुचि लें जो उसे प्रभावित करते हैं। यदि आप अपने शिष्य की खुशी-खुशी सेवा करते हैं, तो वह जान जाएगा कि आप उससे प्रेम करते हैं, और आपका सम्मान करेगा और आपकी नेतृत्व की तलाश करेगा। पौलुस ने कहा, "और मैं तुम्हारी आत्माओं के लिए खुशी-खुशी खर्च और खर्च करूंगा..." (2 कुरिन्थियों 12:15)। बलिदानी प्रेम तुम्हारे शिष्य को "पूर्ण और पूर्ण, किसी चीज़ से कमी" बनने की ओर प्रेरित करेगा (याकूब 1:4)। तुम्हारा शिष्य के प्रति प्रेम तुम्हारे प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित है। यह भावनात्मक भावनाओं से परे है। मसीह के कई शिष्यों ने उन्हें छोड़ दिया और अन्य ने इनकार किया कि वे उन्हें जानते हैं, भले ही वह उनके लिए मर रहा था। लेकिन मसीह की प्रतिबद्धता उनके प्रति अडिग थी: "... उन्होंने अंत तक उनसे प्रेम किया" (यूहन्ना 13:1)। पौलुस का प्रेम उन्हें "सदैव शापित होने के लिए तैयार" बनाता था यदि यह उनके लोगों को बचाता है (रोमियों 9:3 पाउंड)। प्रेम आपको अपने शिष्य के साथ दूसरा मील आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, ताकि आप उसे प्रोत्साहित और मजबूत कर सकें। यह एक निर्णयात्मक, अचानक या मांग करने वाली आत्मा को क्षमा, सहनशीलता और समझ में बदल देता है। प्रेरितों के अपने आध्यात्मिक बच्चों के प्रति प्रेम के अभिव्यक्तियों को सुनें: "इस प्रकार तुम्हारे लिए एक स्नेहपूर्ण स्नेह होना..." (1 थिस्सलुनीकियों 2:8); "क्योंकि मैं तुम्हें देखने के लिए तरसता हूँ..." (रोमियों 1:11); "... मेरे दिल में तुम दोनों हो, मैं मसीह यीशु के स्नेह से तुम सभी के लिए तरसता हूँ" (फिलिप्पियों 1:7,8); "मेरे बच्चों को सत्य में चलते हुए सुनकर मुझे इससे बड़ी खुशी कुछ नहीं है" (3 यूहन्ना 4)। अपने शिष्य को यह बताने में कभी संकोच मत करो कि तुम उससे प्रेम करते हो। हाल ही में मैंने न्यूआर्क में नॉर्म बॉस्वेल को फोन किया, जो लगभग 3,000 मील दूर है, और बस कहा, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" नॉर्म यह जानकर हैरान और रोमांचित हुए कि यही मेरी पुकार का एकमात्र कारण था। सुज़ी ने अपने शिष्य को फूलों का गुलदस्ता देकर आश्चर्यचकित किया। मरियम ने अप्रत्याशित रूप से अपने शिष्य को एक अपॉइंटमेंट से उठाया, ताकि उसे बारिश में घर पैदल न जाना पड़े। अपने शिष्य के प्रति अपने प्रेम की पुष्टि करें। हालांकि, समझाएं कि प्रेम यह भी आवश्यक करता है कि आपका संबंध केवल एक-एक न हो। आत्म-मृत्यु में परमेश्वर के राज्य के लिए प्रिय मित्रताओं पर सीमाएं लगाना शामिल है। आप दोनों को दूसरों को स्वतंत्र रूप से देना और संबंध रखना चाहिए। आपका संबंध मसीह केंद्रित होना चाहिए, स्वार्थी नहीं। कोमलता आपकी नेतृत्व क्षमता को बढ़ाती है। पौलुस कोमल थे "जैसे एक स्तनपान कराने वाली माँ अपने बच्चों की कोमलता से देखभाल करती है" (1 थिस्सलुनीकियों 2:7)। आपकी शिष्य की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता उसकी वृद्धि को प्रोत्साहित करेगी। उसे यह आश्वासन होना चाहिए कि आपका प्रेम उसके दोषों और मानवता से प्रभावित नहीं होगा। पौलुस प्रोत्साहित करता है, "अब उस व्यक्ति को स्वीकार करो जो विश्वास में कमजोर है..." (रोमियों 14:1)। एक शाम मैं एक शिष्य के साथ था जो असामान्य रूप से घबराया हुआ लग रहा था। कुछ मिनटों बाद उसने आंसू बहाते हुए स्वीकार किया: "मैंने तुमसे झूठ बोला।" एक महीने पहले उसने मुझे बताया था कि जिस व्यक्ति से मैं मिलने की योजना बना रहा था, वह उपलब्ध नहीं था। अब उसने स्वीकार किया कि वह कॉल करना भूल गया था और सच बताने से डर रहा था। मुझे लगता है कि वह मुझसे नरक की आग और गंधक से जवाब देने की उम्मीद करता था। मैंने एक पल सोचा और फिर माफी मांगी कि मैंने इतनी मांगलिक भावना व्यक्त की कि वह अपनी गलती स्वीकार करने से डरता था। मैंने उसे आश्वस्त किया कि हमारा संबंध किसी भी सगाई से अधिक महत्वपूर्ण है और मेरा उसके लिए प्रेम उसके किए या असफल किए जाने से प्रभावित नहीं हुआ। उसने बाद में बताया कि उस शाम मेरी स्वीकृति उसके विश्वास का सबसे महत्वपूर्ण कारण थी कि भगवान उसे शिष्य बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है। यदि आप मसीह के बिना शर्त प्रेम की बात करते हैं और फिर जब आपका शिष्य पाप स्वीकार करता है तो घृणा दिखाते हैं, तो आपके कार्य आपके शब्दों को अस्वीकार करते हैं। आपका जीवन यह संवाद करना चाहिए, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। मैं तुम्हारे पक्ष में हूँ।"

कोमलता के लिए समझदारी चाहिए, सही बात कहने या करने की तीव्र समझ बिना किसी को आहत किए। यह आपको अपने सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहने की अनुमति देती है बिना आपके शिष्य की रक्षा तंत्रों को सक्रिय किए। नीतिवचन 15:23 (एलबी) कहता है, "... सही समय पर सही बात कहने में सक्षम होना कितना अद्भुत है!" शिष्टाचार के लिए ईश्वरीय बुद्धिमत्ता आवश्यक है। याकूब 3:17 सिखाता है, "लेकिन ऊपर से आने वाली बुद्धि पहले शुद्ध होती है, फिर शांतिपूर्ण, कोमल, तर्कसंगत, दया और अच्छे फलों से भरी, अडिग, बिना पाखंड के।" कुछ साल पहले हमारे एक कर्मचारी को दूसरे शहर में स्थानांतरित कर दिया गया था। उनके आगमन पर उन्होंने तुरंत उस शहर की सेवा की कई कमियों की ओर इशारा किया और सुझाव दिया कि यह कैसे अधिक प्रभावी और कुशल बन सकता है। नए शहर के कर्मचारी रक्षात्मक रूप से प्रतिक्रिया देते थे, उनकी हर बात को पूरी स्वतंत्रता से अस्वीकार करते हुए।

हालांकि इस युवा महिला के पास वह व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव था जो उसकी नई सेवा के लिए बहुत लाभकारी हो सकता था, उसके पास सूक्ष्मता की क्षमता नहीं थी। उसे उनके जीवन और कार्य के बारे में धमकी भरे सवालों को तब तक टालना चाहिए था जब तक वे यह न जान लें कि वह उनसे प्रेम करती है। सवालों की बौछार को अक्सर पूछताछ के रूप में समझा जाता है। लोग रक्षात्मक हो जाते हैं जब अन्य लोग उनके हर काम में छेद कर देते हैं या बहुत जल्दी बड़े बदलाव सुझाते हैं। "प्रभु दयालु और कृपालु हैं, क्रोधित होने में धीमे और प्रेमपूर्ण दयालुता से भरे हैं" (भजन संहिता 103:8)। आपकी मसीह जैसी गर्मजोशी सुसमाचार की वैधता की रक्षा करती है। यह आपके शिष्य के सम्मान और खुलापन को प्रोत्साहित करती है।

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करता है।*

पृष्ठ 101-104

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशन: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) सीधे पुस्तक से ली गई है बिना संशोधन के।

संशोधित 20261012